RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-05
May-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

अरुणाचल प्रदेश की तांग्सा जनजातिः इतिहास एवं उनका सांस्कृतिक परिचय

[1]चाउ अजोय चाउसोंग–[2]डॉ. लखिमा देओरी

[1]शोधार्थी,अरुणाचल यूनिवर्सिटी ऑफ स्टडीज,नामसाईं, अरुणाचल प्रदेश
[2]असिस्टेंट प्रोफेसर, अरुणाचल यूनिवर्सिटी ऑफ स्टडीज,नामसाईं, अरुणाचल प्रदेश

अरुणाचल प्रदेश बहुभाषिक एवं बहुजनजातिया राज्य है |इस राज्य में तकरीबन 100 जनजातियाँ एवं उपजनजातियाँ निवास करते है अरुणाचल प्रदेश में लगभग 28 प्रमुख जनजातियाँ एवं उनकी 100 से भी अधिक उपजनजातियाँ पायी जाती है |सभी प्रमुख जनजातियों की अपनी–अपनी संस्कृति और भाषाएँ है |इस प्रदेश में जनजातियों की संख्या सर्वाधिक होने के कारण इनकी लोक संस्कृति, जीवन–शैली, बोली–वाणी,भाषा, रहन–सहन, कला, खान–पान, वेश–भूषा, रंग–ढंग आदि में विविधता का होना सामान्य सी बात है |रागात्मक–तादात्मक एवं अपनी जीवन्त प्रकृति के कारण अरुणाचली लोक साहित्य की चर्चा तथा उनका यथेष्ट उल्लेख किया जाना आवश्यक है विशेषकर लोक गाथाओं, लोकगीतों, कथासाहित्य आदि का महत्वपूर्ण स्थान है|ये इस कारण भी स्तुत्य है, क्योंकि इससे अरुणाचली लोकसाहित्य में व्यक्त जीवन दृष्टि तथा उनमें अनुस्यूत परंपरा बोध का ज्ञान सहज ही हो जाता है|अरुणाचल का साहित्य इतना समृद्ध और ऊर्जावान हैं कि वह सदेव अपने जनजातीय समुदाय को लोक जीवन, नैतिक मूल्य तथा मूल अस्मिता से जोड़े रखता है |इसाई मिशनरियों के प्रभाव से अरुणाचल के वातावरण में अवश्य ही बड़ा हस्तक्षेप हुआ और उनके आस्था के विषय को अपने धर्म–प्रचार की मूल नीति से जोड़ दिया है, किन्तु यह बदलाव अथवा उलटफेर सर्वग्रासी नहीं है|अरुणाचल प्रदेश के कई जाती आज भी दौन्यी पोलो की उपासना करते हैं जिसमें सूर्य को माता के रूप में और चन्द्रमा को पिता के रूप में मानते है |अरुणाचल के पूर्व राज्यपाल एवं प्रबुद्ध लेखक माता प्रसाद ने अपनी पुस्तक 'मनोरम भूमि अरुणाचल' में कहा है – "दोन्यी' सूरज को कहें, "पोलो" शशि को [1] दोन्यी पोलो देवता, मानि करें सम्मान द्य अधिसंख्य अरुणाचलवासी आज भी स्वयं को आबोतानी का वंशज मानते हैं और उनकी पूजा–अराधना पूरी निष्ठा और श्रध्दा–भाव से करते हैं |सामान्यता ये अपने पारम्परिक पूर्व–त्योहारों में मिथुन की बलि पूरी श्रद्धा से देते हैं और स्थानीय शराब 'आपोंग' [2] को प्रसाद के रूप में ग्रहण या वितरण करते हैं|अरुणाचल की लोक–कलाओं का विभिन्न रूप आकर्षक, मोहक और अनेकानेक विशेषताओं से सुसज्जित है |सांस्कृतिक रूप से समृद्ध और परम्पराबद्ध अरुणाचली लोक–कला में नृत्य, संगीत एवं सामूहिक प्रस्तुति का विधान सबसे ज्यादा है |यह सामूहिकता जनजातीय समाज की मुख्य पहचान है जिसकी अभिव्यक्ति और प्रस्तुति कई ऐसे विशेष मौके पर होता है जो उनकी उत्सवधर्मिता का पर्याय है |यथा नई ऋतु का स्वागत, नए फसलों के आने या उनके पाक जाने पर, बच्चे के जन्म, विवाह, पूर्व–त्योहार इत्यादि मौके पर देखने को मिलता है | अरुणाचल के मुख्य त्योहारों में कुछ नाम लिए जा सकते हैं– सोलुंग (आदि), न्योकुम (न्यीशी), मोपिन (गालो), द्री (आपतानी), रेह (इदु–मिश्मी), लोसर (मोम्पा), तामालादु (दिगारू–मिश्मी), खान (मिजी), मोल (तांग्सा) इत्यादि |
तांग्सा समाज में रोजमर्रा की जिन्दगी को प्रभावित करने वाली लोक–कथाए, लोक–गाथा, लोकगीत, लोक सुभाषित इत्यादि भी उपलब्ध हैं यहाँ जीवन के हर पहलू में गीत गाये पाये जाते हैं |अनेक प्रकार के गीत जैसे धार्मिक, कृषि–सम्बंधी गीत, प्रेम गीत, जीविका और आखेट सम्बन्धी गीत, पशु–पक्षियों से सम्बंधित तथा लोरी आदि प्रमुख हैं | मानव ह्रदय में स्पदिन्त होने वाले विविध भाव लोकगीतों के प्रेरणा स्त्रोत हैं द्य अरुणाचली साहित्य में प्रकृति के साथ सजीवता के उदाहरण बहुत मिलते हैं |आइनाम ईरिंग मानती हैं कि, "प्रकृति के बहुत करीब रहने के कारण अनेक प्राकृतिक गीत भी उनके लोकगीत में मिलते हैं|उनके लोक कथाओं में उनके आस–पास पाये जाने वाले सभी जीवों और पेड़–पौधों पर आधारित कथाएँ मिलती हैं |अनेक ऐसे लोकगीत हैं जहाँ उन कथाओं को गीतों में लयबद्ध करके प्रस्तुत किया गया है|"तांग्सा समाज में पहले उपजनजातियों के मध्य युद्ध होते रहते थे| अतः अनेक लोकगीत भी हैं जहाँ युद्धों का वर्णन मिलता है|इसी प्रकार तांग्सा समाज में भी कई युद्ध का वर्णन करने वाले गीत उपलब्द है|बहुविध भाव, संवेदना,
विचार–अभिव्यक्ति,दंतकथा–पुराकथा,लोकगाथा–लोककथा इत्यादि को स्वयं में समेटे अरुणाचल का एकात्मक स्वरूप–'अनेकता में एकता' का है|विशेषकर भाषा वह मुख्य उपादान है जिससे अरुणाचलवासी सर्वाधिक लगाव और निकटता महसूस करते हैं|अरुणाचली लोक–साहित्य में प्रयुक्त भाषा धीर्गजीवी होते हैं| भले ही वह अरुणाचल लिपि में न के बराबर लिखी जाती हों, पर उनका असल रूप और ठाठ वाचिक ही है| हालही के दिनों में कुछ जनजातियों

[1]सांवरमलसांगनेरिया ,अरुणोदयकीधरतीपर,पृष्ट .97-98
[2]आपोंगअर्थातचावलसेबनायागयाशराब |

RRIJM 2015, All Rights Reserved

द्वारा अपनी भाषा विकसित और परिष्कृत करने की पहल हो चुकी हैं |तांग्सा लिपि का विकास लाखुम मोस्सांग द्वारा की गई है |[3]

लाखुम मोस्संग द्वारा की गई लिपि :

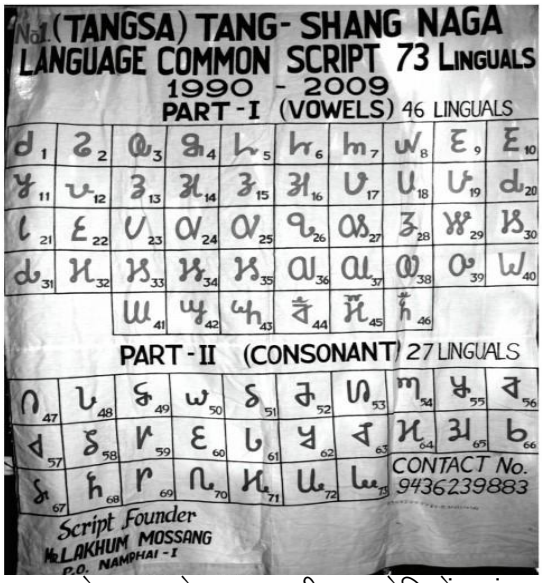

कई बार चाहे–अनचाहे हम अपनी मातृबोलियों एवं भाषाओं को अनदेखा करते है जिससे उनकी आगे बचे होने के उम्मीद भी नष्ट हो जाती हैं| भाषाओं के बचने–बढ़ने की यह कामना जरुरी है, क्योंकि वाचिक अथवा मौखिक रूप में विद्धमान ये शब्द–शक्तियां किसी संस्कृति–विशेष की वास्तविक जमापूंजी है|जातीय स्मृतियों की सामूहिक चेतना इन्हीं के माध्यम से बुलंद तथा दीर्घजीवी बनती हैं| अरुणाचलवासी अपनी जीवन दृष्टी परम्परा बोद्ध और इतिहास दर्शन में तमाम तरह के बदलावों और आधुनिक क्रियाकलापों को आत्मसात किए हुए हैं|तांग्सा समाज पूर्ण रूप से जनतांत्रिक समाज है, जिसकी नीव में 'सम्मा' ह[4]|सम्मा के द्वारा ही तांग्सा समाज की गतिविधियाँ तथा क्रियाकलाप आदि के लिए भी किया जाता है| तांग्सा समाज में न्याय व्यवस्था की संस्था का नाम 'सम्मा' है| तांग्सा समाज के लिए 'सम्मा' वास्तव में वह आचार–संहित है जो समाज की विभिन्न गतिविधियों तथा विभिन्न पहेलुओं में मनुष्य के लिए आचरण का ढाँचा तैयार करती है |राजीव गाँधी विश्वविद्यालय के प्रयोजनमूलक हिंदी पाठ्यक्रम की विधार्थी रह चुकी तोको यानी अरुणाचल प्रदेश के ऐतिहासिक प्रष्ठभूमि को देखें, तो इसका परिप्रेक्ष्य व्यापक और भारतीयता के पहलू से अंतरंग सम्बंधित है| अब तक ज्ञात जानकारी के अनुसार, भारत में कुल तीन तरह की प्रजातियाँ पाई जाती है वह है- आर्यन, मंगोलियन, द्रविडयन|इन तीनों प्रजातियों में से अरुणाचल प्रदेश के लोगों को मंगोलियन जनजाति का मन जाता है|अरुणाचल की पृष्ठभूमि अहोम साम्राज्य की स्थापना से शुरु होता है|तेरहवीं सदी में सुखाफा ने असम के शिव सागर नामक जगह पर कब्जा कर अहोम साम्राज्य की स्थापना की|अहोम साम्राज्य के पतन के बाद अंग्रेजों का शासन शुरू हो गया|सन 1834 तक आते–आते अंग्रजों ने अहोम साम्राज्य पर पूरी तरह कब्जा कर लिया |[5]19 वीं सदी में ही चीन और भारत के बीच शिमला समझौता (1930) हुआ, जिसमें एक सीमा निर्धारित की गई| इस सीमारेखा को सर हेनरी मैकमोहन के नाम से 'मेकमोहन लाइन' नाम दिया गया| जब अंग्रजों ने देखा की उत्तर भारतीय संथाल और गोंड जनजाति के लोग अपने जल, जमीन और जंगल के लिए अंग्रजों के छक्के छुड़ा सकते हैं, तो उनको यह अंदेशा हुआ कि अरुणाचल के जनजातीय लोग भी ऐसा कर सकते हैं| अरुणाचल में प्रवेश सम्बन्धी अधिकार सुनिश्चित करने के लिए अंग्रेजों ने ही 'इनर लाइन परमिट' (Inner line permit) की अवधारणा रखी |[6] सन 1873 में अंग्रजों ने इनर लाइन परमिट बनवाई जिसमें यह नियम लागू किया गया की बाहर से आने वाले लोग इस पहचान - पत्र के बिना अंदर नहीं जा सकते हैं|यथापि आई.एल.पी(I-L-P/inner line permit) की व्यवस्था आज भी अरुणाचल में प्रचलन में है|इस व्यवस्था के कारण यहाँ आने वाले बाहरी लोगों की संख्या कम है और यह परिक्षेत्र शहरीकरण अथवा अतिशय विकास की मार से अब तक बचा हुआ है|किन्तु समय के साथ स्थितियाँ - परिस्तिथियाँ तेजी से बदल रही हैं| आर्थिक सुधार एवं विस्तार ने इस प्रदेश को भी वैश्विक भारत की बदली हुई नई छवि से तालमेल या फिर संतुलन बिठाने की कोशिश में है|

तांग्सा जनजाति की सामाजिक संरचना एवं सांस्कृतिक स्वरूप

जनजातियों की सांस्कृतिक परम्परा और समाज-संस्कृति पर विचार की एक दिशा यहाँ से भी विचारणीय मानी जा सकती है| मानव विज्ञानियों और समाजशास्त्र के अद्येताओं ने विभिन्न जनजातीय समुदायों का सर्वेक्षण मूलक व्यापक अध्ययन प्रस्तुत किया है और उसके आधार पर विभिन्न जनजातीयों के विषय में सूचनाओं के विशद कोष हमें सुलभ है|पुनः इस अकूत शोध– सामग्री के आधार पर विभिन्न जनजातीय समूहों और समाजों के बारे में निष्कर्षमूलक समानताओं का निर्देश भी किया जा सकता है| लेकिन ऐसे अध्ययन का संकट तब खड़ा हो जाता है जब हम ज्ञान को ज्ञान के लिए नहीं मानकर उसकी सामाजिक संगति की तलाश खोजना शुरू करते हैं|ये सारी सूचनाएं हमें एक अनजानी दुनिया से हमारा साक्षात्कार कराती हैं, किन्तु इस ज्ञान का संयोजन भारतीय समाज में उनके सामंजस्यपूर्ण समायोजन के लिए किस प्रकार किया जाए, यह प्रश्न अन्य

[3]Cardoso,Hugo. *Language endangerment and preservation in South Asia*, pg no.72.

[4]सम्मा'वहसंस्थाहैजिसकेद्वारातांग्सासमाजनियंत्रितहोताहै |

[5]Barpujari, H.K.*The comprehensive history of Asaam,* Vol.II

[6]Suman, Shubham, *Pruning the inner line: A study of Inner Line Permit in Arunachal Pradesh,* IOSR, pg no. 46-54.

RRIJM 2015, All Rights Reserved

दुसरे सवालों से अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है| यहाँ समाज– चिंतन की हमारी दृष्टि और उसके कोण की वास्तविक परीक्षा भी शुरू हो जाती है|ठीक यहीं से सूचनाओं का विश्लेष्ण– विवेचना चुनौती बनकर खड़े हो जाते हैं|

संस्कृति का सीधा अर्थ है परिष्कार या संस्कार वस्तुतः परिमार्जित संस्कार ही संस्कृति है|इसके स्वरूप को स्पष्ट करते हुए डॉ. राम खेलावन पाण्डेय ने लिखा है कि "संस्कृ ति शब्द का प्रयोग अपेक्षाकृत अर्वाचीन है और अंग्रजी कल्चर का समनार्थसूचक। इसके संबंध की मान्यताओं में पर्याप्त मतभेद और विरोध हैं इसकी संबंध की मान्यताओं में पर्याप्त मतभेद और विरोध हैं इसकी सीमाएँ तक ओर धर्म का स्पर्श करती हैं तो दूसरी ओर साहित्य को अपने बाहूपाश में आबद्ध करती हैं|संस्कृति भौतिक साधनों के संचयन के साथ ही अध्यात्मिकता की गरिमा से मंडित होती है|वेश–भूषा, परंपरा, पूजा–विधान और सामाजिक रीति–विधान और सामाजिक रीति–नीति की विवेचना भी संस्कृति के अंतर्गत होती है|प्रकृति की सीमाओं पर मनुष्य ने जो विजय चाही, उसका भौतिक स्वरूप सभ्यता, और आत्मिक, अध्यात्मिक अथवा मानसिक स्वरूप संस्कृति है|सभ्यता बाह्य– प्रकृति पर हमारी विजय का गर्वध्वज है और संस्कृति अंतः प्रकृति पर विजय–प्राप्ति की सिद्धि|

तांग्सा जनजाति पानी–खेती पर निर्भर है|यह लोग चावल, मक्का और बाजरा का सेवन अधिक करते हैं|शकरकंद और विभिन्न प्रकार की सब्जी, पसले हैं| उनका मुख्य भोजन दिन में दो बार लेते है और खेत जाने से पहले ये लोग चावल से बना 'अपोंग' का सेवन करते है और यह लोग चावल को अधिक खाते है|चावल से बना 'अपोंग' (पारंपरिक शराब) तांग्सा लोग कोई इसे 'खम' कहते है और कुछ तो इसे 'जू' कहते है|तांग्सा जनजाति के लोग जगली जानवरों का शिकार करते हैं|इनके कई देवी–देवता हैद्य इन सभी देवताओं को समय–समय पर परिवार और समुदाय को समस्याओं से सुरक्षित रखने के लिए इनकी पूजा की जाती हैं|तांग्सा जनजाति की एक प्रमुख त्यौहार 'मोल' है, जो मार्च–अप्रैल महीने में मनाया जाता है ताकि ग्राम और समुदाय के कल्याण के लिए देवताओं के यजमानो को पेश किया जा सके|ये लोग मांस और मछली का अधिक सेवन करते है|

तांग्सा जनजाति के घर का आकार लम्बा होता है, घरों की मंजिल जमीन से चार से पांच फीट ऊँचे हैं और लकड़ी या बांस का खम्बे बनाए जाते हैं, जो आमतोर पर एक संयुक्त परिवार को समायोजित करता है|इस घर के निर्माण के लिए बांस, लकड़ी और टोकू पत्ते का उपयोग किया जाता है और आगे पर एक छोटा सा बरामदा भी बनाया जाता है जिस पर चूल्हा भी बना होता और ठीक उसके ऊपर जलाने की लकड़ी सुखायी जाती है और जो की खाना पकाने और आग सेकने के लिए होता है|तांग्सा जनजाति के लोगों को शिकार करना और मछली पकड़ने का बहुत शौक होता है तांग्सा जनजाति के शिकार करने के लिए भी कई कारण होते है -

- सबसे पहले जंगली जानवरों और मछलियों को सुखा कर शादी और पूजा समारोह में दिया जाता है|
- जंगली जानवरों से कृषि का संरक्षण हैं कृषि अपने खेती दृ बारी को बचाने के लिए शिकार करते है कई जंगली जानवर धान, फसल नष्ट कर देते है|खेत के सुरक्षा के लिए भी लोग शिकार करते हैं|
- शिकार करने के लिए तांग्सा जनजाति के लोग फंदे बनते है जो पक्षियों को फसाने के लिए तैयार किया जाता है और इस प्रणाली में पत्थर का सादा उपयोग करते है चूहों को फसाने के लिए भी फंदे लगाये जाते हैं, जो खेत पर मक्का को नष्ट कर देते है इस प्रणाली पर चूहों को आकर्षित करने के लिए फंदे पर मक्का डाला जाता है|

वेशभूषा दृ तांग्सा जनजाति में अतिरंग वस्त्र पहने जाते हैं|पुरुष एक संकीर्ण कमर का कपड़ा पहेनते है जिसे 'रिग्तम' कहते है|इसे पेरो के बिच पहना जाता है और सामने नीचे लटका दिया जाता है जो जांघो के आधे हिस्से तक पहुँचता है|जिसके आधे हिस्से में कशीदाकारी होते है|महिलाएं पुराने समय के अंग्रजी और भारत के चांदी के सिक्के और यूनान के चांदी सिक्कों का उपयोग कर माला बनाकर पहनती हैं, जिसे 'लक्तम या लक्शु' कहते हैं और रंग–बिरंगी पोशाक पहनते है जिसे 'खाई साईं रिक फोंग' कहते हैं|इन जनजातियों में अधिकांश चांदी का प्रयोग करते हैं किसी भी विवाह हो या पूर्व त्यौहारों में इन्ही सभी चांदी का ही प्रयोग करते हैं|

मोल त्यौहार - यह त्यौहार तांग्सा समाज द्वारा अरुणाचल प्रदेश के चांगलांग जिले में मनाया जाता है| यह त्यौहार मार्च और अप्रैल महीने के बीच मनाया जाता है|इस त्यौहार के दोरान धरती माँ की पूजा की जाती है|इस त्यौहार के माध्यम से पृथ्वी को देवी और देवताओं के रूप में सम्मान दिया जाता हैं|इन देवी–देवताओं को माता–पिता के रूप मानकर पहाड़ों, चट्टानों की पूजा की जाती है|नदियों को देवी के रूप में पूजा जाता है|यह त्यौहार एक प्रकृति पूजा है और इस त्यौहार में सभी लोग मिल–जुल कर लोक नृत्य करते हैं, जो एक लोकप्रिय पारंपरिक नृत्य है इस त्यौहार को इसलिए मनाया जाता है, ताकि समाज में सुख–शांति बनी रहे और कोई बीमारी न हो और सभी लोग नीरोग रहे, यही सभी की प्रार्थना होती है|इस त्यौहार को गाँव के सभी लोग मिलकर मानते हैं|इसे प्रारंभ करने से पहले पूजा किया जाता हैं इस त्यौहार को इन जनजाति के लोग बड़े उत्साह के साथ मानते हैं|

विवाह समारोह -तांग्सा जनजातियों में जब लड़की के रिश्ते की के बात चलती है तो लड़की वालो के घर पर लड़के के रिश्तों की बात–चीत करने के लिए लड़के वालों की ओर से एक व्यक्ति को भेजते हैं |उस व्यक्ति को लड़की के

RRIJM 2015, All Rights Reserved

घर पर चार–पांच दिन तक आने–जाने लगा रहता है, फिर रिश्ते की बात मिल जाने पर नियम एवं संस्कार अनुरूप एक सूअर दिया जाता है |नियम की तरफ से और अन्त पर लड़की जब घर पर पहला प्रवेश करते समय भी सूअर दिया जाता है |विवाह के दोरान दुल्हन को लेने आते समय, दुल्हे के माता–पिता दुल्हन को अपने पूर्वजों के वस्तु गहने भेट के रूप में प्रस्तुत करते हैं|

जन्म समारोह दृ गर्भ धारण होने के बाद नवजात शिशु के कल्याण के लिए जन्म समारोह के समय घर वालों को एवं माता–पिता को कुछ नियम का पालन करना पड़ता है|बच्चे जन्म के समय में पिता को कार्य करने से मना किया जाता है, घर निर्माण करना, रस्सी बांधना, किल ठोकना, पशु–पक्षी का शिकार करन आदि पर प्रतिबंध होता है, क्योंकि माना जाता है कि यह सब करने से शिशु पर बुरा असर पड़ता हैं|जब लड़का जन्म लेता है तो पिता को कई दोनों तक इन सभी नियमो का पालन करना पड़ता है और माँ को पांच दिनों तक जब लड़की का जन्म होता है तो पिता को दस दिन तक इस नियम का पालन करना होता है तथा माँ को चार दिन तक इन नियमों का पालन करना पड़ता है|

बलि प्रथा - तांग्सा जनजातियों में देवी–देवताओं को प्रसन्न करने के लिए यह प्रथा प्रचलित है|बलि प्रथा के अंतर्गत मुर्गी, सूअर, गाय, मिथुन आदि की बलि चढ़ाई जाती है|जब किसी विवाह, पूजा या कुछ त्यौहार के दोरान भी इस प्रथा का उपयोग किया जाता है, तो यह अनिवार्य होता है जब किसी की विवाह के समय सूअर और महिलाओं को टोकरी बना कर विवाह का नियम किया जाता है तथा घर पर कुछ पूजा के दोरान भी मुर्गियों की बलि चढ़ाई जाती है ताकि देवी देवता प्रसन्न हो कर बिमारियों से मुक्त करवा देने की कामना करते है|इसलिए तांग्सा नियमों में बलि प्रथा को अति महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है तथा हर एक पूजा समारोह पर इस बलि प्रथा का होना अनिवार्य होते हैं| किसी भी पूजा या उत्सव पर पशुओं की बलि चढ़ाएँ बिया पूजा सफल नहीं हो पाती| किसी व्यक्ति के बीमार पड़ने पर भी किसी जानवर या पक्षी का बलि देते हैंद्य बलि के लिए जानवर का निर्धारण वही पुजारी (सम्मा) निर्धारित करते हैं|

आर्थिक स्थिति दृ तांग्सा जनजाति में अधिकतर लोग कृषि कार्य पर निर्भर होते है यह लोग अर्थव्यवस्था के लिए अनेक फसले उगाते हैं| जैसे कि इलायची, अदरक, संतरे, अनारस और अन्य फल उगाते हैं|यह लोग हस्त कला में भी बहुत माहिर हैं| इस जनजाति के लोग अपने गृहस्थी को चलाने के लिए अनेक कार्य करते है यह लोग बांस से टोकरी बनाकर बेचते है और महिलाएँ अपने हाथों से कोट, शर्ट, लुंगी अलग–अलग रंग बिरंगी हस्त कला के साथ कपड़े बुनती है|मुख्य रूप से यह लोग धान और चाय पत्ती की खेती अधिक करते हैं|यह लोग बहुत मेहनती होते हैं|वह हर कार्य अपने हाथों से करते हैं|इन के पास बैल या ट्रेक्टर न होने पर भी यह लोग अपने हाथों से खेतों की साफ–सफाई कर लेते हैं|पहले तो सभी खेती करके अपना परिवार चलाते थे|पर अब सभी लोग पढ़–लिख कर आगे बढ़ने लगे हैं चाहे वह लड़का हो या लड़की सभी लोग पढ़ –लिख कर आगे बढ़कर नौकरी करने लगे हैं|जिसके कारण अब उनकी जीवनयापन में कई परिवर्तन आ गए|अब खेती करने के लिए भी अनेक उपकरण अर्थात दवाई के बारे में जानकारी प्राप्त हुए जिससे खेत सुरक्षित रहे|अब पुरुष और महिला दोनों ही सरकारी नौकरी में शामिल हो गए हैं तथा अब वे लोग कृषि पर अधिक ध्यान न देकर नौकरी करने में लगे हैं |

पंसू पास विंटर फेस्टिवल (PANGSAU PASS WINTER FESTIVAL)

इस त्यौहार के दौरान आपको तांग्सा जनजातियों की रीति–रिवाज से परिचय होगा|जो दोनों भारतीय और म्यांमार के हैं और रंगीन संस्कृतियों, परम्पराओं और अरुणाचल प्रदेश की अद्भुत कलाओं से परिचय होगा|पूर्वोत्तर भारत और म्यांमार(बर्मा) के विभिन्न जनजातियों को ये त्यौहार 'पंसू पास सर्दियों का त्यौहार' मानते हैं|यह त्यौहार यहाँ के जनजातियों को मजबूर करता है उन्हें लोक नृत्य और लोक गीत गाने के लिए|यह त्यौहार तीन दिन तक मनाया जाता है उसी दोरान यहाँ के जनजातीय अपनी अनूठी संस्कृति का प्रदर्शन करते है|यह त्यौहार अरुणाचल प्रदेश के चांगलांग जिले के नम्पोंग और म्यांमार के पंसू स्थानीय जनजातियों की सांस्कृतिक उत्सव है|इस शीतकालीन त्यौहार को दोनों राष्ट्रों को एक साथ लाने के लिए शुरू किया गया था|प्रसिद्ध 'पंसू पास' का दरवाजा, जो अरुणाचल के अंतिम शहर, नाम्पोंग और बर्मा को जोड़ता है और यह त्यौहार पहली बार 2007 को शुरू हुआ|इन तीन दिनों के दौरान क्षेत्र सभी सामाजिक बाधाओं को तोड़ते हुए एक वैश्विक गाँव में बदल जाता है। इस त्यौहार के समय आप बहुत सी अद्भुत संस्कृति को देखने मिलेंगे जैसे लोक नृत्य, लुन्चंग नृत्य जो चांगलांग की एक उपजाति है जो तांग्सा जाति के अंतर्गत आते है, वंचो नृत्य, असम के मसूर बिहू नृत्य, मिजो बांस नृत्य इत्यादि |यह त्यौहार बाहरी लोगों के लिए अजूबों को देखने के लिए एक शानदार जगह है|'पंसू पास' पटकई पहाड़ी के भारतीय–मयंमार (बर्मा) सीमा पर स्थित है|'पंसू पास' असम के मैदानी इलाके से बर्मा के लिए सबसे आसान मार्गों में से एक है जो अरुणाचल प्रदेश के चांगलांग जिले के जैरामपुर शहर के माध्यम से आता है|एतिहासिक 'स्टिलवेल रोड' जो पटकई पहाड़ी पर स्थित जो वहाँ के तांग्सा जनजातियों के लिए भी एक मशहुर स्थान है |यह 'पंसू पास' अपने प्रचुर वनस्पतियों और जीवों के भंडार के लिए भी जाना जाता है|सर्दियों का महोत्सव के रूप में संस्कृति भव्यता के बाद एतिहासिक 'पंसू पास' बड़े पैमाने पर उभर कर सामने में आया|

इस त्यौहार में लोक गीत और युद्ध नृत्य, कला, शिल्प, जातीय भोजन, पारंपरिक खेल और बहुत कुछ देखने को मिलता है|यह त्यौहार कारीगरों को भी साथ लाता है, जो

RRIJM 2015, All Rights Reserved

कि अरुणाचल और बर्मा दोनों जगहों से हथकरघा और हस्तकला का प्रदर्शन करते हैं|यहाँ के निवासियों को उनके आतिथ्य के लिए जाना जाता है|वे सभी खुले दिल के हैं और वे आपको और अन्य जिगासु बाहरी लोगों के लिए अपनी दुनिया खोलने में प्रसन्न हैं द्य उसी के पास [WORLDWAR II CEMETERY] भारतीय–बर्मा सीमा बाजार और 'लेक ऑफ नो रिटर्न' LAKE OF NO RETURN आदि देखने को मिलता है|'लेक ऑफ नो रिटर्न' एक ऐतिहासिक झील है जिसमे विमान दुसरे विश्व युद्ध के दौरान दुर्घटनाग्रस्त हो गया था|इस झील को आप तक के वैज्ञानिकों ने भी नहीं सुलझा पाया इसी करण से झील ओर भी प्रसिद्ध है [7]

डी लेक ऑफ नो रिटर्न (THE LAKE OF NO RETURN)

यह झील भारत–बर्मा की सीमा के पास स्थित है, जिसे 'लेक ऑफ नो रिटर्न'के नाम से जाना जाता है, यह झील कुछ रहस्यमयी घटनाओं के कारण कुख्यात है |यह झील भारत के नागाओं के सीमावर्ती शहर पंसू के क्षेत्र में मौजूद है|माना जाता है कि यह क्षेत्र तांग्सा जनजाति का घर है|इस झील के नामकरण के पीछे बड़ी कहानी छिपी हुई है द्य किंवदंतियों के अनुसार द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अमेरिकी ने यहाँ पर समतल जमीन समझकर आपातकालीन लैंडिंग करा दी थी|परिणाम स्वरूप उसके हवाई जहाजों के साथ कई कर्मचारी आचानक गायब हो गये थे|तभी से इसे 'लेक ऑफ नो रिटर्न' कहा जाने लगा|इस झील से जुड़ी हुई एक लोककथा बहुत मशहुर है|कहते हैं कि द्वितीय विश्व युद्ध अपने चरम पर था इसी कड़ी में एक युद्ध के बाद जापानी सैनिक वापस लौटते वक्त अपना रास्ता भटक गए थे|वह जब इस झील के पास पहुंचे तो रहस्यमय तरीके से लापता हो गए|वहीँ इस झील के पास लीदु (असम) में काम करने वाले अमेरिकी सैनिकों को झील का परिक्षण करना के लिए भेजा गया था, तो वे भी वापस नहीं लौट सके|कहानी यहाँ खत्म नहीं होती, माना जाता है कि 1942 में ब्रिटिश सैनिकों का एक समूह इस झील के पास मौजूद रेत में धंस गया थे [8] इस झील के आसपास रहने वालों के मुताबिक, कई साल पहले इस झील के किनारे एक खुशहाल गाँव हुआ करता था, एक बार गाँव वाले जब मछली पकड़ने गए तब जाल में एक बेहद भारी–भरकम मछली फंस गयी|जिसके बाद गाँव वालों ने जलसा मनाया, लेकिन इस दावत में गाँव की एक बूढी औरत और उसकी पोती शामिल नहीं थे| उन्हें यह ठीक नहीं लग रहा था|उन्हें किसी बड़ी अनहोनी की आहट सुनाई पड़ रही थी|वह दोनों जंगल की ओर भाग गई|कहा जाता है कि उसी रत पूरा का पूरा गाँव इस झील में जलमग्र हो गया था|

[7]http://www.lifeawayfromlife.com/wordpress/tours/pangsau-pass-festival/

[8] Kalantri, Rishu, *Lake of no return beckons visitors,* The Telegraph online edition, 20th Jan., 2017.

द्वितीय विश्व युद्ध कब्रिस्तान जैरामपुर (WORLD WAR II CEMETERY/JAIRAMPUR)

हाल ही में लगभग 1,000 कब्रों वाले कब्रिस्थान के बारे में पता चला है, जो कि दूसरे विश्व युद्ध में मारे गए थे|उनमे से ज्यादातर चीनी, कचिन, भारतीय, ब्रिटिश और अमेरिकी सैनिक थे|जोकि भारत के राज्य अरुणाचल प्रदेश के चांगलांग जिले के जैरामपुर में स्टिलवेल रोड पर स्थित है | यह कब्रस्थान नम्चिक नदी के किनारे और स्टिलवेल रोड के बीच घने जंगलों से ढकी हुई कब्रस्थान है, जो जैरामपुर से छह मील, 39 मील लेडो से और भारत–बर्मा सीमा के 'पंसू पस' पहुँचने से पहले चौबीस मील पर स्थित है|इस क्षेत्र को सेनाओं ने साफ किया और लगभग तीन एकड़ की क्षेत्र में फले लगभग एक हजार कब्रें मिली हैं|कब्रस्थान के सीमा को तीन तरफ से प्रवेश के साथ ठोस पदों से घेरा गया है|कब्र को पांच पंक्तियों और कई पंक्तियों में व्यवस्थित किया गया है|जापानी सेना के खिलाफ लड़ाई और सड़क के निर्माण के दौरान बहुत से सैनिकों को मलेरिया, पेचिश, भूस्खलन, युद्ध के समय गोली लगने से और अन्य कारणों से बहुत से सैनिकों की मृत्य हो गई|इंडो–बर्मा सीमा पर पटकई रेंज और उत्तर–बर्मा के शिन्द्बयंग रेंज दुनिया के सबसे कठिन इलाकों में से एक है|जहाँ सड़क निर्माण का कार्य जनरल जोसेफ स्टिलवेल द्वारा बन रहा था|उसी समय 1942 में जापानी सेनाओं के खिलाफ लड़ाई के दौरान जापानियों ने लगभग पूरे बर्मा को अपने हाथो में ले ही लिया था|यह माना जाता है कि कब्रिस्थान का इस्तेमाल युद्ध के मृत सैनिकों के निपटान के लिए किया जाता था और भारत और बर्मा में सड़क निर्माण से बाहर आने वाली आपदाओं के लिए|उस समय अधिकतर सेनाओं की मौत बिमारियों के कारण, लड़ाई के दौरान से होती थी और कुछ घायल सैनिकों को लीडो अस्पताल पर भर्ती की जाती थी और जिसकी मृत्य हो जाती थी उसे कब्रिस्तान पर रख दिया जाता था|इस कब्रिस्थान पर एक बहुत बड़ा कब्र है जिस पर चीनी भाषा में उन मरे हुए सेनिकों के ऑफिसर और बटालियन के नाम लिखे हुए हैं|जनमें से एक मेजर हिसओं छु चिंग (HSIAO CHU CHING), कंपनी कमांडर सेकंड कंपनी, सेकंड बटालियन ऑफ 10जी रेजिमेंट, इंडिपेंडेंट एंगिनीर्स ऑफ चिनेसे आर्मी इन इंडिया [9]

लेडो–स्टिलवेल रोड : भारत से बर्मा और चीन तक (LEDO & STILWELL ROAD% FROM INDIA TO BURMA AND CHINA)

ऐसी ही एक चीन–बर्मा–भारत (CHINA&BURMA&CHINA/CBI) क्षेत्र है जो ज्यादा प्रचारित नहीं हुआ है|यह 1942 में शुरू हुआ जब जापानी ने बर्मा पर हमला किया और ब्रिटिश इंडिया की सेना को हराने के बाद उस पर कब्जा कर लिया|इसने बर्मा रोड को उस समय के एकमात्र मार्ग को बंद कर दिया गया,

[9]Census of India Arunachal Pradesh, Series-13, Part –XII- B, Directorate of Census Operations Arunachal Pradesh

जो भारत से युद्धग्रस्त चीन तक ले गया |यह एक वैकल्पिक मार्ग के साथ सने के लिए एक तत्काल आवश्यकता थी जिसके कारण सड़क का निर्माण हुआ, जो मानवता की सबसे शक्तिशाली निर्माण परियोजना में से एक थी|पूर्वोतर भारत में असम के चाय के बगीचों से शुरू होकर,यह यात्रा उच्च बर्मा और फिर चीन तक |यू.एस सेना द्वारा और भारतीय श्रमिकों जबरदस्ती इस सड़क के निर्माण में लगाया गया, जोकि दुनिया के कठिन इलाकों में से एक है, जिसमे वर्षावनों का सबसे घना पहाड़ शामिल था|वर्षा के छह महीने से अधिक के लिए वर्षा–ऋतु की अनन्त बारिश के साथ संयुक्त, लेडो सड़क एक असाधारण मानवीय निर्माण बन गया| इसकी शुरुवात 16 दिसंबर 1942 में हुआ और इस सड़क के निर्माण को पूरा होने में पूरे तीन साल का समय लगा|फिर भी युद्ध के दौरान इस सड़क से लगभग 35,000 टन की वस्तु और गोला–बारूद चीन तक पहुचने में कामयाब रही|इस सड़क के निर्माण के समय बहुत से सैनिकों और गरीब मजदूरों की मौत हो गयी|हजार से अधिक अमेरिकी सैनिक और कई भारतीय सड़क के निर्माण में मारे गए, जोकि एक नरक के सामान था [10] इस सड़क के बारे में ओर भी अधिक जानकारी के लिए मार्क जेंकिन द्वारा लिखे गए लेख 'डा घोस्ट रोड' में पढ़ा जा सकता है, वे लिखते है कि-I spent a year of my life trying to complete the Stilwell Road] but I gave back the advance and didn*t write the book- I wasn*t ready- To this day] my arrogance] ignorance] and selfishness appall me- Adventure becomes hubris when ambition blinds you to the suffering of human beings neÛt to you- Only at the end of my odyssey did I fully accept that traveling the road didn*t make a damn bit of difference- That wasn*t the point- It wasn*t about me- It was about Burma……ß[11]

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर तंग्सा जनजाति का इतिहास एवं उनकी सांस्कृतिक परिवेश का ज्ञान हो जाता है। संस्कृति के अध्येताओं के लिए सांस्कृतिक सापेक्षतावाद के अनेक अभिप्राय हो जाते हैं। इसी तर्क के आधार पर यह माना जाता है कि न तो किसी संस्कृति को श्रेष्ठ कहा जा सकता है और न हीन, न तो महत्त्वपूर्ण और न महत्त्वरहित। जब हम कुछ जातियों को आदिम कहते हैं, तो संभवतः हमारा अभिप्राय यही होता है कि वे हमारे समकालीन जीवन की पूर्ववर्ती स्थिती के उदारहण हैं। लेकिन यह धारणा भी तथ्याधारित नहीं ठहरती। वस्तुतः विश्व के मानचित्र पर अलग–अलग भौगोलिक परिवेश में इतनी किस्म की संस्कृतियाँ विद्य मान हैं, रही हैं की कहना पड़ता है कि हर समाज की संस्कृति उसका सांचा है और सामान्य संस्कृति के लक्षणों के निर्धारण में किसी भी एक संस्कृति का सांचा सम्पूर्ण नहीं हो पाता।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

सिंह, शरद (2014), भारत के आदिवासी क्षेत्रों की लोककथाएँ, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली ।

त्रिपाठी, व्यासमणि (2012), अंडमान तथा निकोबार की लोक–कथाएँ , साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ।

सिंह, रसाल, मीणा, बन्ना राम (2014), आदिवासी अस्मिता वाया कथा साहित्य, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्युटर्स (प्रा.) लिमिटेड, नई दिल्ली ।

गुप्ता, रमणिका (2013), पूर्वोत्तर आदिवासी सृजन मिथक एवं लोककथाएँ, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया ।

चतुर्वेदी, शिवम् (2018), लोक साहित्य और व्यावहारिक भाषा, फर्स्ट प्रिंट पब्लिकेशन, इलाहाबाद ।

अंग्रेजी सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1- India % Annamalai university ¼centre for advanced study in Linguistic½ Phd Simai] Chimoi 2008- A profile of Tikhak Tangsa of Arunachal Pradesh] New Delhi] Authors press-

2- Statezni] Nathan- 2012- Dialect variation and perceptions among the Tangshang Naga in Mayanmar- Paper presented at the North East Indian Linguistics Society conference] Guwahati] Assam] 3&5 feb] 2012-

3- Statezni] Nathan & Akhi] 2011- So near and yet so far % Dialect variation and contact among the Tangshang Naga in Mayanmar- Paper presented at NWAV Asia&Pacific 1 confrence] Delhi] India] 23&26 february 2011-

4- Thomas] Mathew- 2009- A Sociolinguistic varieties in Changlang district of Arunachal Pradesh- Tamil Nadu] India%Annamalai University ¼Centre for Advance Study in Linguistics½ PhD dissertation-

5- Morey] Stephen D- 2013- Grammatical change in North East India % the case of Tangsa- Paper presented at the South East Asian Linguistics society] Chulatongkorn University Bangkok] may 2013-

6- Morey] Stephen D & Jurgen Schopf] submitted the language of ritual in Tangsa&the Wihu song- In martin Gaenzle el al ¼eds½- Ritual speech in the Himalayans % oral teÛt and their conteÛts-

7- Hastie] Paul-in preparation Tikhak – a Tangsa language- Melbourne] Australia % La Trobe University Phd dissertation-

8- Barua] S-N] Tribes of Indo–Burma border socio – cultural history of the inhabitants of the patkai range] mittal publication] new Delhi] 1991-

9- Morang] H-K] ^Tangsa Aaina* a book about the socio&culture life of the Tangsa community of Arunachal Pradesh- Published by % Namchik Society for Eco&tourism and Wildlife Conversation] Jairampur] Changlang Dis.

[10]Kunwar, Juri, *International Journal of Humanities and Social science,* Vol. ,4 No.9 (1); July 2014, Pg. no. 264-269.

[11]The ghost road' from Outside magazine, Oct 2003